संवाद

शिक्षा का सरोकार एक सार्थक व उत्पादक जीवन की तैयारी से होता है। बच्चों के सर्वांगीण विकास में शिक्षकों और अभिभावकों, दोनों की अहम भूमिका होती है। भारत सरकार भी शिक्षा स्तर को बेहतर बनाने के लिए समय-समय पर शिक्षा नीतियों का निर्माण करती है। शिक्षा नीतियों को ज़मीनी स्तर पर सफ़ल बनाने के लिए पठन-पाठन सामग्री का निर्माण किया जाता है, शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाता है, विद्यार्थियों की रुचि के अनुसार पठन-पाठन की व्यवस्था की जाती है, विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता को विकसित करने के लिए नित नए प्रयास किए जाते हैं, साथ ही यह कोशिश भी की जाती है कि अभिभावकों और शिक्षकों के बीच संबंध मज़बूत हों। किंतु फिर भी कई ऐसे कारण हैं जिनसे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देश के सभी बच्चों तक नहीं पहुँच पाती।

इन बातों को ध्यान में रखते हुए *प्राथमिक शिक्षक पत्रिका* 'अक्तूबर 2015–जनवरी 2016' का यह अंक एक संयुक्तांक रूप में प्रस्तुत है। इस संस्करण में कुल 16 लेख हैं जो शोध, संस्मरण एवं अनुभव आदि पर आधारित हैं। इसके अतिरिक्त अंक में तीन कविताएँ एवं बालमन के अनुभव भी शामिल हैं।

देश में निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम, 2009 के लागू होने से अब बच्चों को मुफ़्त और अनिवार्य शिक्षा का मौलिक अधिकार मिल गया है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (NCTE) द्वारा निर्मित नेशनल करिकुलम फ़ॉर टीचर एजुकेशन–2009 में अध्यापकों के प्रशिक्षण की रूपरेखा प्रस्तुत की गई है जिसमें सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में नए आयाम जुड़े हैं। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन उनमें से एक है। यह बच्चों के सीखने की गति में वृद्धि करता है। साथ ही अध्यापकों को छात्रों की क्षमता और कमज़ोरियों को बार-बार बताता है ताकि वे अपनी शिक्षण संबंधी कार्यनीतियों में सुधार कर सकें।

प्रत्येक बच्चे का अपना रचना संसार होता है, जीवन और वस्तुओं को देखने व परखने का अपना ही नज़रिया एवं सीखने की गति होती है। अतः हमें ऐसा वातावरण तैयार करने की आवश्यकता है जिसमें बच्चों को पढ़ने-लिखने और आगे बढ़ने के तमाम अवसर प्राप्त हों। यह पत्रिका इस ओर एक छोटा-सा प्रयास है। आशा है कि यह संयुक्तांक आपको पसंद आएगा।

अकादमिक संपादक

मन का विकास करो और उसका संयम करो, उसके बाद जहाँ इच्छा हो, वहाँ इसका प्रयोग करो—उससे अति शीघ्र फल प्राप्ति होगी। यह है यथार्थ आत्मोन्नति का उपाय। एकाग्रता सीखो, और जिस ओर इच्छा हो, उसका प्रयोग करो। ऐसा करने पर तुम्हें कुछ खोना नहीं पड़ेगा। जो समस्त को प्राप्त करता है, वह अंश को भी प्राप्त कर सकता है।

— स्वामी विवेकानंद

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 4 5/26/2017 9:26:51 AM